रीढ़ की हड्डी (एकांकी)

लेखक: जगदीश चंद्र माथुर
कक्षा: नवीं
विषय : हिंदी

प्रस्तुतकर्ता : एस. डी. शर्मा
टी.जी.टी. (एस.एस)
हिंदी/ संस्कृत
प. ऊ. कें. वि.- 2, तारापुर

रीढ़ की हड्डी

हिंदी के प्रसिद्ध एकांकीकार श्री जगदीश चंद्र माथुर द्वारा लिखित प्रस्तुत एकांकी में समाज में व्याप्त रूढ़िवादी मानसिकता एवं लड़कियों के प्रति समाज द्वारा किए जा रहे उपेक्षाभाव पर कठोर प्रहार किया गया है। एकांकी का कथानक रामस्वरूप उनकी पुत्री उमा गोपाल प्रसाद तथा शंकर जैसे लालची और आचार विहीन लड़के के आसपास घूमता है।

सारांश

रामस्वरूप की लड़की उमा को देखने के लिए लड़के वाले आने वाले हैं। अत: रामस्वरूप अपने नौकर के साथ अपने अतिथि कक्ष को सजाने में व्यस्त हैं। उनके स्वागत की तैयारी में पूरा परिवार जुटा हुआ है। नौकर नयी चादर लाकर बिछा देता है। रामस्वरूप अतिथि कक्ष में हारमोनियम भी रखवा देते हैं। प्रेमा अपने पति रामस्वरूप से कहती है कि बेटी उमा तो नाराज है और वह शादी के लिए अनुत्साहित सी लग रही है। प्रेमा कहती है कि उमा को एंट्रेंस ही पास करना चाहिए था। यह अधिक पढ़ने का प्रतिफल है। रामस्वरूप प्रेमा को बताते हैं कि लड़के वाले और स्वयं लड़का कम पढ़ी-लिखी लड़की चाहता है अत: बेटी की पढ़ाई के बारे में सच नहीं बोलना है।

गोपाल प्रसाद और शंकर समयानुसार रामस्वरूप के घर पधारते हैं। प्रेमा और रामस्वरूप उनका अपनी क्षमता अनुसार अतिथि सत्कार करते हैं। दोनों में विभिन्न विषयों पर बातचीत होती हैं, तथा वर्तमान समय की तुलना अपने बचपन व पढ़ाई के समय से करते हैं। रामस्वरूप शंकर की पढ़ाई के विषय में पूछते हैं तो गोपाल प्रसाद उमा की सुंदरता के विषय में जानकारी प्राप्त कर स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि हमें अधिक पढ़ी-लिखी लड़की नहीं चाहिए। कौन झेलेगा इसके नखरों को। उमा हारमोनियम के पास आकर बैठ जाती है। गोपाल प्रसाद उमा से गाने को कहते हैं। उमा तल्लीनता और मधुरता से मीरा का पद गाती है। गोपाल प्रसाद उमा से पेंटिंग व सिलाई आने के विषय में अनेक प्रश्न करते हैं लेकिन उमा उत्तर नहीं देती है।

अन्त में दृढ़ता के साथ उमा कहती है कि "जब कुर्सी मेज बिकती है तो दुकानदार कुर्सी मेज़ से कुछ नहीं पूछता। सिर्फ खरीददार को दिखला देता है। पसंद आ गई तो अच्छा, वरना.....!"

यह महाशय जो मेरे खरीददार बनकर आए हैं इनसे जरा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होता ? क्या उनको चोट नहीं लगती? वह आगे कहती हैं कि जरा अपने साहबजादे से पूछिए कि लड़कियों के हॉस्टल के इर्द-गिर्द क्यों घूम रहे थे ? और वहां से कैसे भगाए गए थे। जब गोपाल प्रसाद उमा की पढ़ाई पर आश्चर्य प्रकट करते हैं तो वह कहती है कि "मैंने बी. ए. पास किया है चोरी नहीं ।" वह आगे कहती हैं कि घर जाकर देखिए, आपके चरित्रहीन बेटे की रीढ़ की हड्डी है भी या नहीं। गोपाल प्रसाद अपना सा मुंह लेकर चले जाते हैं। रामस्वरूप भी धम से कुर्सी पर बैठ जाते हैं।

शब्दार्थ

महाशय- सज्जन व्यक्ति

दकियानसी खयाल - पुराने पिछले विचार

नफरत- घृणा

जायचा- जन्मपत्री

छवि- सुंदरता

अर्ज करना- निवेदन करना

हैसियत- क्षमता

मार्जिन- अंतर

भावबोधात्मक प्रश्न

1. उमा क्या कह कर लड़कियों की पीड़ा प्रकट करती है?

2. रीढ़ की हड्डी के आधार पर शंकर का चरित्र चित्रण कीजिए।

3. क्या झूठ और फरेब के आधार पर संबंध स्थाई रह सकते हैं?

4. क्या स्त्रियों की दुनिया घर गृहस्थी तक सीमित है ? अपने विचार प्रकट करें।

5. समाज में महिलाओं को उचित गरिमा दिलाने हेतु आप कौन-कौन से प्रयास कर सकते हैं?

ग्रहकार्य

1. रामस्वरूप काअपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलवाना और विवाह के लिए छिपाना, यह विरोधाभास उनकी किस विवशता को उजागर करता है?

2. अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए रामस्वरूप उमा से जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कर रहे हैं, वह उचित क्यों नहीं है?

3. "आपके लाडले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं.." उमा इस कथन के द्वारा शंकर की किन कमियों की ओर संकेत करना चाहती है?

4. शंकर जैसे लड़के या उमा जैसी लड़की - समाज को कैसे व्यक्तित्त्व की आवश्यकता है?

5.' रीढ़ की हड्डी' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

6. कथावस्तु के आधार पर आप किसे एकांकी का मुख्य पात्र मानते हैं और क्यों?

7. एकांकी के आधार पर रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए ।

8. इस एकांकी का मूल उद्देश्य क्या है?